Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मृच्छकटिकम् प्रकरण ग्रन्थ में भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध सन्दर्भ

डॉ. मीनाक्षी सिंह*

* सहायक प्राध्यापक (संस्कृत) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध प्रकरण ग्रन्थ मृच्छकटिकम् जिसके लेखक महाकवि शूद्रक है जो भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में एक समग्र, अन्तर्विषयक एवं अकादमिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह प्रकरणग्रन्थ केवल प्रेमकथा या सामाजिक रूपक न होकर भारतीय जीवन–दर्शन, नैतिकता, राजनीति, अर्थव्यवस्था, नारी चेतना तथा लोक–संस्कृति का जीवन्त उदाहरण है।

मृच्छकटिकम् में शास्त्रीय चिन्तन और लोकानुभव का अद्भुत समन्वय है, जो भारतीय ज्ञान परम्परा की मूल विशेषता है। धर्म, अर्थ और काम तीनों पुरुषार्थ यहाँ नैतिक मर्यादा के अन्तर्गत प्रतिष्ठित हैं। चारुदत्त और वसन्तसेना जैसे पात्र भारतीय मूल्य–बोध के आदर्श प्रतिनिधि हैं।

शब्द कुंजी –मृच्छकटिकम्, भारतीय ज्ञान परम्परा, संस्कृत नाटक, धर्म–दर्शन, नारी चेतना।

प्रस्तावना – ज्ञान मानव सभ्यता का आधार है। प्रत्येक संस्कृति ने अपने अनुभव, पर्यावरण और जीवन–दृष्टि के अनुसार ज्ञान की परम्पराएँ विकसित की हैं। भारतीय सभ्यता में विकसित ज्ञान–परम्परा विश्व की प्राचीनतम और निरन्तर प्रवाहित ज्ञान–परम्पराओं में से एक है। भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल उद्देश्य केवल तथ्यात्मक ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि मनुष्य को एक नैतिक, विवेकशील और समाजोपयोगी प्राणी के रूप में विकसित करना है।

भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की प्राचीनतम सतत् परम्पराओं में से एक है। वेद, उपनिषद, स्मृति, पुराण, दर्शन, काव्य और नाट्य सभी इस परम्परा के संवाहक रहे हैं। इस ज्ञान परम्परा का लक्ष्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि मानव के सर्वांगीण उत्थान का मार्ग प्रशस्त करना रहा है। भारतीय चिन्तन में पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के माध्यम से जीवन को संतुलित एवं सार्थक बनाने का प्रयास किया गया है।संस्कृत नाट्यकला को इस परम्परा में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में नाटक को पञ्चम वेद कहा है

न वेदेषु न शास्त्रेषु न विद्येषु न कर्मसु।
नाट्येऽस्मिन् दृश्यते यत्तत्सर्वं नाट्ये प्रतिष्ठितम्।।

अर्थात् नाटक में वह सब कुछ है जो वेदों, शास्त्रों और विद्याओं में निहित है। इसी दृष्टि से मृच्छकटिकम् केवल एक साहित्यिक रचना न होकर भारतीय जीवन–दर्शन का समग्र प्रतिबिम्ब है।जिसमें राजनीति, लोकाचार और मानवीय संवेदना का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

मृच्छकटिकम् – ग्रन्थ, रचनाकार एवं कथावस्तु – भारतीय राजाओं ने दृश्यकाव्यों को दो खण्डों में विभक्त किया है– रूपक तथा उपरूपक। नाट्यशास्त्र में रूपक के 10 भेद माने गये है, नाटक, प्रकरण, भाण, प्रहसन, डिम, व्यायोग, समवकार, वीथी, अङ्क और ईहामृग तथा उपरूपक के 18 भेद नाटिका, त्रोटक, गोष्ठी, सट्टक, नाट्यरासक, प्रस्थान, उल्लाप्य, काव्य, प्रेङ्खण, रासक, संलापक, श्रीगदित, शिल्पक, विलासिका, दुर्मल्लिका, प्रकरणी, हल्लीश और भाणिका।

मृच्छकटिकम् नाटक नहीं अपितु एक प्रकरण ग्रन्थ है। प्रकरण का नायक धीरप्रशान्त लक्षणसम्पन्न कश्चित् विप्र, अमात्य या वणिक् होता है। मृच्छकटिकम् का नायक ब्राह्मण चारूदत्त भी धीरप्रशान्त है। प्रकरण की नायिका कुलजा और वेश्या में से कोई एक अथवा दोनों ही होती है। इस प्रकार नायिका के आधार पर प्रकरण के तीन भेद है। जिस प्रकरणमें दोनों तरह की नायिकाएँ होती है, उसमें धूर्त, द्यूतकर, सभिक, विट, चेट आदि पात्र मञ्च पर उपस्थित होते है। मृच्छकटिकम् की नायिका वसन्तसेना वेश्या एवं धूता कुलजा है।

इस दृष्ट्या भी मृच्छकटिकम् प्रकरण ग्रन्थ है। प्रकरण ग्रन्थ की कथावस्तु भी नाटक की तरह प्रख्यात न होकर कवि कल्पित होती है। मृच्छकटिकम् की भी कथा चारुदत्त एवं वसन्तसेना का सङ्गम तथा शूद्रक के उर्वरक मस्तिष्क की देन है। अत: निश्चय ही मृच्छकटिकम् प्रकरण है, यतोहि इसमें प्रकरण से समस्त लक्षणविद्यमान है।धनञ्जय तथा आचार्य विश्वनाथ ने भी इस विषय में कहा है –

भवेत् प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितम्।
शृङ्गारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्।।
सापायधर्मकामार्थपरो धीरप्रशान्तक:।
नायिका कुलजा क्वापि वेश्या क्वापि क्वचित् द्वयम्।।
तेन भेदास्त्रयस्तस्य तत्र भेदतृतीयक:।
कितवद्यूतकारादिविटचेटकसङ्कुल:।।

मृच्छकटिकम् यद्यपि एक प्राचीन रूपक है फिर भी इसकी प्रासङ्गिकता आज भी सामाजिक स्तर पर एक नया सन्दर्भ उत्पन्न करती है।मृच्छकटिकम् एक दस अंकों वाला प्रकरण रूपक है, जिसके रचयिता महाकवि शूद्रक है। यद्यपि शूद्रक के ऐतिहासिक अस्तित्व पर विद्वानों में मतभेद है, तथापि नाटक की साहित्यिक महत्ता निर्विवाद है। सूत्रधार सर्वप्रथम नाटककार का परिचय देते हुए कहता है –

द्विरदेन्द्रगतिश्चकोरनेत्र: परिपूर्णेन्दुमुख: सुविग्रहश्च।

द्विजमुख्यतम: कविर्बभूव प्रथित: शूद्रक इत्यगाधसत्त्व:।।
ऋग्वेदं सामवेदं गणितमथ कलां वैशिकीं हस्तिशिक्षां।
ज्ञात्वा शर्वप्रासादात् व्यपगततिमिरे चक्षुषी चोपलभ्य।
राजानं वीक्ष्य पुत्रं परमसमुदयेनाश्वमेधेन चेष्ट्वा
लब्ध्वा चायु: शताब्दं दशदिनसहितं शूद्रकोऽग्निं प्रविष्ट:।।
समरव्यसनी प्रमादशून्य: ककुदो वेदविदां तपोधनश्च।
परवारणबाहुयुद्धलुब्ध: क्षितिपाल: किल शूद्रको बभूव।।

अर्थात् नाटककार शूद्रक एक विख्यात बलवान् क्षत्रिय था। वे गजराज की तरह मदमस्त गतिवाले, चकोर की तरह उनकी आकर्षक आंखों वाले, राकाचन्द्र की तरह मनोहर मुखवाले, सुगठित शरीरवाले, विपुलबलशाली क्षत्रियों में श्रेष्ठ शूद्रक नामक विख्यात कवि हुए। वेदत्रयी, नृत्यगीतादि चतुर्षष्ठी कलाओं, व्यापारादि नियमों एवं गजपालनादि विद्याओं में राजाशूद्रक निपुण थे। शिवजी की कृपा से इन्हें दिव्यदृष्टि प्राप्त थी। इन्होंने अश्वनेधयज्ञ भी किया तथा अन्त अपने पुत्र को समस्त राज्य देकर, 110 वर्ष की आयु का उपभोग कर अग्नि में प्रवेश किया।

मृच्छकटिक अर्थात् मिट्टी की गाडी(खिलौना) – यह प्रतीक चारुदत्त की आर्थिक दरिद्रता और आन्तरिक पवित्रता दोनों का द्योतक है। यह प्रतीकात्मकता भारतीय ज्ञान परम्परा की उस दृष्टि को प्रकट करती है जिसमें बाह्य वैभव की अपेक्षा आन्तरिक मूल्यों को श्रेष्ठ माना गया है,और यह प्रतीक उसी दर्शन को उद्घाटित करता है।

किसी प्रकरण का वृत्त लौकिक कवि कल्पित या लोकवृत्त पर आधारित होना चाहिए। मृच्छकटिकम् की कथा कल्पनाप्रसूत है तथा लोकप्रसिद्ध प्रेमवृत्त पर आधारित इस प्रकरण की रचना की गई है। नाटक की प्रमुख वस्तु उसका व्यापार होता है। मृच्छकटिकम् की कथा अभिनय के द्वारा आगे बढाया और साथ ही सामाजिक को निरन्तर आगे बढने हेतु सर्वत्र कौतूहलपूर्ण अवसर और सुयोग प्रदान किये है। इस प्रकरण की दूसरी विशिष्टता है कि रचनाकार ने इसकी कथावस्तु में प्रसिद्ध राजन्य वर्ग को छोडकर मध्यमवर्ग का चयन किया है। कवि ने उज्जयिनी से मध्यमवर्गीय समाज की दैनिक चर्या को इस प्रकरण का आधार बनाकर इसे अत्यधिक स्वाभाविक दे दी है। उज्जयिनी नगर की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। अपनी विशिष्ट कथावस्तु के कारण ही कवि ने इस प्रकरण को संस्कृत साहित्य में यथार्थवादी प्रकरण कहलाने का श्रेय प्रदान किया है। जहाँ महाकवि कालिदास तथा भवभूति के नाटकों में हमें काव्य तथा उदात्तभावना के दिव्यदर्शन होते है, वही मृच्छकटिकम् में हमें जीवन की उष्मा और कठोर यथार्थवादी वास्तविकता के दर्शन होते है।

नाटक का नायक चारुदत्त एक दरिद्र किन्तु अत्यन्त धर्मनिष्ठ ब्राह्मण है, जबकि नायिका वसन्तसेना एक सम्पन्न, सौम्य और संवेदनशील गणिका है।इनके अतिरिक्त शकटार, संस्तानक, मैत्रेय, विदूषक, चोर, दास, भिक्षुक आदि अनेक पात्र लोकजीवन की विविध परतों को उद्घाटित करते हैं।इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा केवल अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं, बल्कि लोकजीवन से गहरे रूप में जुड़ी हुई है।

भारतीय ज्ञान परम्परा – सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य – भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल आधार समन्वय है, भौतिक और आध्यात्मिक, शास्त्र और लोक, व्यक्ति और समाज तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकृचारों पुरुषार्थों को संतुलित रूप में स्वीकार किया गया है। यह परम्परा न तो भौतिकता का अतिरेक स्वीकार करती है और न ही संसार–त्याग को ही जीवन का लक्ष्य मानती है। इसमें जीवन को संघर्ष नहीं, साधना माना गया है।

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग्भवेत्।।

इस लोकमंगलकारी दृष्टि का प्रभाव मृच्छकटिकम् में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।यह भारतीय ज्ञान परम्परा की लोकमंगलकारी दृष्टि को व्यक्त करता है।मृच्छकटिकम् में यह भावना चारुदत्त के आचरण, वसन्तसेना की करुणा और सामान्य जन के संघर्षों के माध्यम से मूर्त होती है।दार्शनिक दृष्टि से यह नाटक अद्वैत, कर्मफल सिद्धान्त और नैतिक मानववाद तीनों से जुड़ता है।

धर्म की अवधारणा और नैतिक मूल्य

दरिद्रस्यापि धर्मो हि न परित्याज्य एव हि।
धर्मेण हीन: पुरुष: पशुभि: समतां व्रजेत्।।

भारतीय जीवन–दर्शन की उस मूल भावना को अभिव्यक्त किया गया है जिसके अनुसार धर्म परिस्थितिजन्य नहीं होता, बल्कि वह व्यक्ति के आचरण और चेतना का स्थायी आधार होता है। निर्धनता सामान्यत: मनुष्य को विचलित कर देती है और उसे अनैतिक साधनों की ओर प्रवृत्त करती है, किन्तु चारुदत्त जैसे आदर्श पात्र यह सिद्ध करते हैं कि आर्थिक अभाव भी नैतिक पतन का कारण नहीं बनना चाहिए। यहाँ 'धर्म' का अर्थ केवल धार्मिक कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि सत्यनिष्ठा, करुणा, परोपकार और आत्मसंयम से है। चारुदत्त की दरिद्रता के बावजूद उसका उदात्त आचरण भारतीय ज्ञान परम्परा के उस आदर्श को मूर्त करता है जिसमें चरित्र को धन से श्रेष्ठ माना गया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में धर्म को जीवन का नियामक तत्त्व माना गया है। यहाँ धर्म सामाजिक आचरण और आत्मिक अनुशासन दोनों का समन्वय है।

भारतीय परम्परा में धर्म का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सत्य, करुणा, अहिंसा, कर्तव्य और नैतिक आचरण है। चारुदत्त का सम्पूर्ण चरित्र धर्मप्रधान है। वे अत्यन्त निर्धन होने पर भी अपने नैतिक मूल्यों से विचलित नहीं होते।चारुदत्त का यह कथन भारतीय जीवन–दर्शन का सार प्रस्तुत करता है।आज के उपभोक्तावादी समाज में यह श्लोक नैतिक स्थिरता और मूल्य–आधारित जीवन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

आर्थिक यथार्थ और सामाजिक नैतिकता– भारतीय ज्ञान परम्परा में अर्थ को पुरुषार्थ के रूप में स्वीकार किया गया है, किन्तु वह धर्म के अधीन रहता है।मृच्छकटिकम् में आर्थिक विषमता का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। चारुदत्त की दरिद्रता और वसन्तसेना की सम्पन्नता के माध्यम से नाटक यह प्रतिपादित करता है कि धन का नैतिक उपयोग ही उसका वास्तविक मूल्य है।यह दृष्टि उपनिषदों की उस परम्परा से जुड़ती है जहाँ धन को साधन माना गया है, साध्य नहीं।चारुदत्त का चरित्र इस सिद्धान्त को मूर्त रूप देता है।आज के भौतिकवादी समाज में यह विचार आर्थिक नैतिकता की पुनर्स्थापना का सन्देश देता है।

काम तत्त्व : मर्यादित प्रेम और मानवीय संवेदना– भारतीय ज्ञान परम्परा में काम को भी धर्म के अधीन स्वीकार किया गया है। चारुदत्त और वसन्तसेना का प्रेम शारीरिक नहीं, बल्कि आत्मिक और करुणामय है।

धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ।।

श्रीमद्भगवद्गीता का यह कथन मृच्छकटिकम् के प्रेम–दर्शन की कुंजी है। चारुदत्त और वसन्तसेना का प्रेम सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करता।यह दृष्टि नाटक में प्रतिफलित होती है तथा यह भारतीय दर्शन के

समन्वयवादी स्वरूप को दर्शाती है।

नारी चेतना और स्त्री गरिमा – वसन्तसेना मृच्छकटिकम् की केन्द्रीय नायिका है। वह केवल गणिका नहीं, बल्कि करुणा, आत्मसम्मान और नैतिक साहस का प्रतीक है।वसन्तसेना का चरित्र भारतीय नारी चेतना का सशक्त प्रतीक है। वह आत्मसम्मान, करुणा और त्याग का आदर्श प्रस्तुत करती है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।।

स्त्री केआत्मसम्मान और स्वाभिमान को रेखांकित करता है। वसन्तसेना किसी भी स्थिति में आत्मगौरव नहीं त्यागती।यह दृष्टि भारतीय नारी चिन्तन की उदात्ता परम्परा से जुड़ी है।आज के स्त्री–विमर्श के सन्दर्भ में वसन्तसेना का चरित्र अत्यन्त प्रासंगिक है।

राजनीति, राज्य और न्याय व्यवस्था – नाटक में राजा पालक के शासन की अन्यायपूर्ण प्रवृत्तियों का चित्रण है।भारतीय राजनीतिक चिन्तन में आदर्श राजा की अवधारणा स्पष्ट होती है।भारतीय ज्ञान परम्परा में राज्य और राजनीति का उद्देश्य केवल शासन नहीं, बल्कि लोककल्याण है।मृच्छकटिकम् में तत्कालीन राज्यव्यवस्था का यथार्थ चित्रण मिलता है। राजा पालक के शासन में अन्याय, भ्रष्टाचार और अत्याचार व्याप्त हैं, जिसके कारण समाज में असंतोष उत्पन्न होता है।

राजा सत्यं च धर्म च राजा कुलवतां कुलम्।
राजा माता पिता चैव राजा हितकरो नृणाम्।।

अर्थात् राजा सत्य है राजा को धर्म का आधार और रक्षक माना जाता है।मृच्छकटिकम् में इस आदर्श के अभाव को दिखाकर कवि राजनीतिक चेतना जाग्रत करता है।

लोकजीवन, करुणाऔर अहिंसा – करुणा भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल है।मृच्छकटिकम् में करुण रस की प्रधानता है।मृच्छकटिकम् का विशेष महत्तव इसका लोकमूलक स्वरूप है। दास, चोर, भिक्षुक, सेवक जैसे पात्र समाज के उपेक्षित वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अहिंसा परमो धर्मस्तथा हिंसा परं तप:।।

अहिंसा भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल है। नाटक में करुणा और सहानुभूति के प्रसंग इस सिद्धान्त को जीवंत बनाते हैं।हिंसा और संघर्ष से ग्रस्त आधुनिक विश्व में यह मूल्य अत्यन्त प्रासंगिक है।

लोकजीवन और सांस्कृतिक परम्पराएँ – नाटक में निम्नवर्गीय पात्रों के माध्यम से लोकजीवन का यथार्थ चित्रण है। यह दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा लोकमूलक है।

मृच्छकटिकम् की समकालीन प्रासंगिकता – आज के समाज में नैतिक संकट, आर्थिक विषमता और न्याय की समस्या के सन्दर्भ में यह नाटक अत्यन्त प्रासंगिक है। इसकी नाटकीयता जो पहली दृष्टि में ही पाठक तथा दर्शक को चमत्कृत करती है वह है इसकी चुम्बकीय आकर्षण शक्ति जो सबको सम्मोहित किये रहती है।

यह प्रकरण ग्रन्थ वास्तव में अत्यन्त विलक्षण है। अर्थात् इसकी कथा देवताओं, ऋषियों और किसी राजा के इर्द गिर्द नही घूमती। संस्कृत के शृङ्गारप्रधान अन्य नाटकों में कामबाण में विंधा हुआ नायक, नायिका को रिझाने या जीतने का प्रयास नही करता है, अपितु इस प्रकरण में इस परम्परा के विपरीत नायिका स्वयं नायक पर रीझकर, उसे पाने का प्रयत्न करती है। इस प्रयत्न में वह अपने प्राणों को भी संकट में डाल देती है। इतना ही नही यह प्रकरण आद्यन्त क्रान्तिकारी है। इसमें नाट्यशास्त्रानुसार वर्जित–रंगमञ्च पर निद्रा, मृत्यु आदि के दृश्य दिखलाये गये है। इसका प्रतिनायक धूर्तता तथा निकृष्टता का जीता जागता प्रतीक है तथा इसके अन्य पात्र जनसाधारण है यथा– व्यवसाय से सेंधमार और स्वभावत: चतुर्वेदी विप्र शर्विलक, विरक्त होकर बौद्धभिक्षु बने जुआरी, अत्याचारी राजा के विरूद्ध कार्य करने वाले राजपुरुष, राजनैतिक दबाव में आकर गलत न्याय करने वाले न्यायाधीश, निर्दोष का वध करने वाला जल्लाद आधुनिक परिवेश के बहुरंगीन पुष्प है। इस प्राचीन प्रकरण में भावि यथार्थ का एक दिलचस्प चित्र उजागर किया गया है।

निष्कर्ष – मृच्छकटिकम्भारतीय ज्ञान परम्परा का एक समग्र, लोकमूलक और मानवीय उद्धरण है। मृच्छकटिकम्केवल एक प्रकरण ग्रन्थ नहीं, अपितु भारतीय ज्ञान परम्पराका सशक्त साहित्यिक प्रतिरूप है। इसमें धर्म, अर्थ, काम, राजनीति, नारी चेतना, करुणा, लोकजीवन तथा कर्मफल सिद्धान्त का ऐसा समन्वय मिलता है जो भारतीय चिन्तन की समग्रता को अभिव्यक्त करता है। चारुदत्त और वसन्तसेना जैसे पात्र भारतीय जीवन–दर्शन के नैतिक, मानवीय और करुणामय पक्ष को मूर्त रूप प्रदान करते हैं।

नाटक का अध्ययन यह सिद्ध करता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा केवल अतीत का विषय नहीं, बल्कि समकालीन समाज के नैतिक, सामाजिक और शैक्षिक प्रश्नों के समाधान हेतु आज भी प्रासंगिक है। यह नाटक अतीत की धरोहर ही नहीं, वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. शूद्रक –मृच्छकटिकम् (मूल पाठ एवं टीका सहित), चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
2. भरतमुनि –नाट्यशास्त्रम्, चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।
3. पं. रामावतार शर्मा – संस्कृत नाटक का इतिहास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
4. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी – भारतीय नाट्य परम्परा, हिन्दी समिति सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश।
5. डॉ. रामकुमार वर्मा – भारतीय संस्कृति और दर्शन, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
6. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन – भारतीय दर्शन (भाग 1–2), राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
7. मनुस्मृति – हिन्दी अनुवाद सहित, गीताप्रेस, गोरखपुर।
8. श्रीमद्भगवद्गीता – शांकरभाष्य सहित, गीताप्रेस, गोरखपुर।
9. डॉ. नगेन्द्र –भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
10. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी –भारतीय साहित्य की भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
11. डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' – संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन।
12. डॉ. शिवकुमार मिश्र – भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक संदर्भ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
13. डॉ. कपिल कपूर – Indian Knowledge Systems: Concepts and Applications (हिन्दी–अंग्रेजी संदर्भ), डी.के. प्रिंटवर्ल्ड, दिल्ली।
14. यूजीसी –Indian Knowledge Systems: Framework and Guidelines, भारत सरकार प्रकाशन।
15. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) – भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय।